Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ में भारत की भूमिका

डॉ. यादव सिंह सहायक आचार्य, लोक प्रशासन, राजकीय महाविद्यालय, रूपवास.

ABSTRACT:

ग्लोबल साउथ में भारत का योगदान महत्वपूर्ण और बहुआयामी दोनों है। दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में, भारत ग्लोबल साउथ के कई देशों के लिए एक उल्लेखनीय उदाहरण और प्रेरणा का स्रोत है। भारत का वैश्विक दक्षिण के कई देशों के साथ औपनिवेशिक संघर्ष और अविकसितता का साझा इतिहास रहा है। इसलिए भारत ने लगातार G77 और BRICS सहित वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों के हितों की वकालत की है और दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, भारत तकनीकी नवाचार, विशेष रूप से आईटी क्षेत्र में तेजी से से आगे बढ़ रहा है और साथी विकासशील देशों को तकनीकी सहायता और सहयोग प्रदान करता है। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक पहलों में इसकी सक्रिय भागीदारी सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। इसके अलावा, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक समावेशिता पर जोर ग्लोबल साउथ के देशों के बीच सहयोग और समन्वय को बढ़ाता है। स्वास्थ्य, शिक्षा और मानव संसाधन विकास में भारत द्वारा की गई विभिन्न पहल अन्य विकासशील देशों के लिए प्रेरणा के मूल्यवान स्रोत के रूप में काम करती हैं। भारत ग्लोबल साउथ में विकास, सहयोग और स्थिरता में योगदान करते हुए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, वैश्विक मंच, विकास, सहयोग, समन्वय, अर्थव्यवस्था ।

1. ग्लोबल साउथ क्या है?:

"ग्लोबल साउथ" शब्द का इस्तेमाल सबसे पहले अमेरिकी विद्वान कार्ल ओग्लेसबी ने 1969 में कैथोलिक पत्रिका "कॉमनवील" के एक विशेष अंक में किया था, जो वियतनाम युद्ध पर केंद्रित था। इसमें ओग्लेसबी ने सुझाव दिया कि ग्लोबल साउथ पर उत्तरी क्षेत्रों के लंबे समय से चले आ रहे प्रभुत्व के परिणामस्वरूप एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था बन गई है जिसे स्वीकार करना मुश्किल होता जा रहा है।

"ग्लोबल साउथ" शब्द का सामान्य अर्थ विभिन्न भू-राजनीतिक, ऐतिहासिक और विकासात्मक कारकों की विशेषता वाले देशों के एक विविध समूह से है। इसका उपयोग अक्सर उपनिवेशवाद के स्थायी प्रभाव और उन देशों के बीच मौजूद आर्थिक असमानताओं पर जोर देने के लिए किया जाता है जो पहले उपनिवेश थे। "ग्लोबल साउथ" देशों को विकासशील या कम विकसित माना जाता है। ये देश मुख्य रूप से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं। यह नामकरण उन अनूठी चुनौतियों की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है जिनका सामना ये देश आर्थिक वृद्धि और विकास की खोज में करते हैं। ग्लोबल साउथ देशों को गरीबी, अधिक जनसंख्या वृद्धि, कम आय स्तर और अपर्याप्त आवास सहित विभिन्न आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मानचित्र में पूर्व जर्मन चांसलर विली ब्रांट द्वारा प्रस्तावित ब्रांट लाइन के द्वारा ग्लोबल साउथ को दर्शाया जाता है।

स्रोत- विकिपीडिया

2. ग्लोबल साउथ की मांग / समस्याएं:

(I) आनुपातिक वैश्विक प्रतिनिधित्व: वैश्विक दक्षिण, जिसमें पर्याप्त आबादी वाले देश शामिल हैं, का मानना है कि उनके दृष्टिकोण को हमारी दुनिया के भविष्य को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। यह देखते हुए कि वैश्विक आबादी का तीन-चौथाई हिस्सा इन देशों में रहता है, उनका तर्क है कि वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनका आनुपातिक और सार्थक प्रतिनिधित्व होना महत्वपूर्ण है।

(II) न्यायसंगत प्रतिनिधित्व: वैश्विक दक्षिण वैश्विक शासन में निष्पक्ष प्रतिनिधित्व की सम्मानपूर्वक वकालत करता है। मौजूदा ढांचा हमारी दुनिया की जनसांख्यिकीय और आर्थिक वास्तविकताओं को पूरी तरह से नहीं पकड़ सकता है, जिससे यह सुनिश्चित करने के लिए सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है कि वैश्विक दक्षिण के दृष्टिकोणों को स्वीकार किया जाए और उन्हें ध्यान में रखा जाए।

3.ग्लोबल साउथ के साथ भारत का ऐतिहासिक जुड़ाव:

(I) गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना: भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना में महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभाई है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन वैश्विक दक्षिण की सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्राथमिकताओं को दर्शाता है। भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के एजेंडे को आकार देने में नेतृत्व की स्थिति संभाली है।

(II) जी-77 की स्थापना: भारत ने संयुक्त राष्ट्र के भीतर 134 विकासशील देशों वाले गठबंधन जी-77 की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जी-77 का प्राथमिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वैश्विक दक्षिण के दृष्टिकोणों को संयुक्त राष्ट्र महासभा और सभी संयुक्त राष्ट्र समितियों में प्रतिनिधित्व मिले।

(III) 1972 का स्टॉकहोम सम्मेलन: जलवायु परिवर्तन के बारे में वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को उजागर करने में भारत ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सम्मेलन के दौरान सतत विकास के सिद्धांतों, साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (सीबीडीआर) की धारणा और प्रदूषण करने वाले को भुगतान करना सिद्धांत जैसी महत्वपूर्ण अवधारणाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4.ग्लोबल साउथ देशों के हित में भारत के प्रयास:

(I) वैश्विक दक्षिण को सशक्त बनाना: भारत विकासशील देशों की आवाज़ के रूप में खुद को स्थापित करता है, तथा G20 जैसे प्रमुख मंचों पर उनकी चिंताओं को स्वीकार किए जाने की वकालत करता है। इसमें "वैश्विक दक्षिण शिखर सम्मेलन की आवाज़" जैसी पहल शामिल हैं, जिसका उद्देश्य विकासशील देशों द्वारा सामना की जाने वाली साझा चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक मंच स्थापित करना है।

(II) समर्थन और सुधार: भारत विकासशील देशों के हितों का अधिक सटीक प्रतिनिधित्व करने के लिए वैश्विक संस्थाओं में सुधारों की वकालत करता है। इसमें अंतर्राष्ट्रीय कराधान,

जलवायु, वित्त जैसे क्षेत्रों में परिवर्तन और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे संगठनों के भीतर विकासशील देशों के निर्णय लेने के अधिकार को बढ़ाना शामिल हो सकता है।

(III) दक्षिण-दक्षिण सहयोग: भारत मूल्यवान सर्वोत्तम प्रथाओं, प्रौद्योगिकियों और संसाधनों को साझा करके विकासशील देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है। 2017 में स्थापित भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास भागीदारी कोष, वैश्विक दक्षिण के नेतृत्व वाली सतत विकास परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए समर्पित है, जिसमें सबसे कम विकसित देशों और छोटे विकासशील राज्यों की सहायता पर विशेष जोर दिया गया है।

(IV) जलवायु परिवर्तन शमन: भारत पर्यावरण की रक्षा और जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करने के लिए अन्य देशों के साथ मिलकर काम कर रहा है। ऐसा करने का एक तरीका अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) नामक समूह के माध्यम से है, जो एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों को सूर्य से स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग करने में मदद करता है। इससे इन देशों को बढ़ने और मजबूत बने रहने में मदद मिलेगी।

5.भारत बन रहा वैश्विक दक्षिण की आवाज:

(I) नई दिल्ली घोषणा: भारत ने नई दिल्ली में जी-20 की अध्यक्षता का उपयोग जी-20 सदस्यों के बीच आम सहमति बनाने के लिए किया ताकि नई दिल्ली घोषणा में ऋण, वित्तपोषण, जलवायु न्याय और लैंगिक समानता जैसे वैश्विक दक्षिण के मुद्दों को शामिल किया जा सके। भारत ने इस समूह का नेतृत्व किया और सभी को महत्वपूर्ण बातों पर सहमत होने में मदद की, जो कई देशों को प्रभावित करती हैं, खासकर उन देशों को जो उतने अमीर नहीं हैं। इन महत्वपूर्ण बातों में कर्ज में डूबे देशों की मदद करना, पर्यावरण की देखभाल करना शामिल है।

(II) जी-20 का विस्तार: भारत ने अफ्रीकी संघ को शामिल करके जी20 समूह को बड़ा बनाने में मदद की, जो कई अफ्रीकी देशों का प्रतिनिधित्व करता है। इस तरह, महत्वपूर्ण बैठकों के दौरान ग्लोबल साउथ या अभी भी विकासशील देशों की आवाज़ें सुनी जा सकती हैं।

(III) वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन: भारत, ग्लोबल साउथ देशों के बीच एकजुटता बनाने के लिए वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन का आयोजन कर रहा है क्योंकि ये देश अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

(IV) वैक्सीन मैत्री: कोविड-19 के मद्देनजर भारत ने निःशुल्क वैक्सीन और दवाइयां उपलब्ध कराकर वैश्विक दक्षिण देशों में कई लोगों की जान बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(V) अधिक प्रतिनिधि बहुपक्षीय मंच: भारत ग्लोबल साउथ के देशों को आमंत्रित करके BRICS और SCO जैसे अन्य देशों के साथ बड़ी समूह बैठकों को और अधिक निष्पक्ष बनाने के लिए काम कर रहा है। उदाहरण के लिए, उन्होंने ब्रिक्स में बदलाव करके इसमें और अधिक देशों को शामिल किया और इसे ब्रिक्स प्लस नाम दिया। ब्रिक्स और भारत–ब्राजील–दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) संवाद मंच जैसे मंचों के माध्यम से भारत यह सुनिश्चित करने के लिए काम करता है कि वैश्विक शासन में वैश्विक दक्षिण की आवाज़ सुनी जाए।

(VI) जलवायु न्याय: जलवायु न्याय का मतलब है यह सुनिश्चित करना कि सभी को, खास तौर पर गरीब देशों को जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली समस्याओं से निपटने में मदद मिले। भारत इन महत्वपूर्ण वार्ताओं में अन्य देशों का समर्थन करने के लिए नेतृत्व कर रहा है। इसका एक उदाहरण यह है कि उन्होंने COP28 नामक एक बड़ी बैठक में "लॉस एंड डैमेज फंड" नामक एक विशेष कोष बनाया, ताकि जलवायु परिवर्तन से प्रभावित देशों की मदद की जा सके। आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (CDRI) जैसी पहल भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में लचीले बुनियादी ढांचे के निर्माण के प्रयासों को उजागर करती है।

6.लोकतांत्रिक देश के रूप में भारत की भूमिका:

(I) लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देना: भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लोकतांत्रिक शासन की लगातार वकालत करता रहा हैI भारत स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, मानवाधिकार और विधि के शासन के महत्व पर जोर देता है । उदाहरण के लिए, भारत ITEC नामक कार्यक्रम के ज़रिए दूसरे देशों को यह सीखने में मदद करता है कि वे अपनी सरकारें बेहतर तरीके से कैसे चलाएँ। यह कार्यक्रम उन देशों के जिम्मेदारों को ज़रूरी कौशल सिखाता है, जिससे पता चलता है कि भारत सभी को निष्पक्ष और अच्छे तरीके से शासन करने में मदद करने की परवाह करता है।

(II) चुनावी प्रक्रियाओं के लिए समर्थन: भारत अपने ज्ञान और कौशल को साझा करके दूसरे देशों को निष्पक्ष चुनाव कराने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, भारत में चुनाव चलाने वाले लोगों ने अफ़गानिस्तान, भूटान और नेपाल जैसी जगहों पर मतदान प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद की है। इससे पता चलता है कि भारत इन देशों को उनके लोकतंत्र में मज़बूत बनने में मदद करना चाहता है।

(III) समावेशी विकास की वकालत: भारत का विकास मॉडल, जो समावेशी विकास और गरीबी उन्मूलन को प्राथमिकता देता है, अन्य विकासशील देशों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

(IV) अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA): भारत इस परियोजना पर काम करके पृथ्वी की देखभाल करने में मदद कर रहा है। यह परियोजना यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि सभी लोगों को, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जिनके पास उतना नहीं है, वह सब कुछ मिल सके जो उन्हें अच्छी तरह से जीवन जीने और खुश रहने के लिए आवश्यक है।

7. ग्लोबल साउथ में एक नेता के रूप में भारत के लिए चुनौतियां:

(I) संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता: जी-5 समूह के हिस्से के रूप में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सीट के लिए भारत की कोशिशों को कॉफी क्लब (यूनाइटेड फॉर कंसेसस 1995) के सदस्यों {इटली, ,पाकिस्तान, ,मेक्सिको, मिस्र, स्पेन, अर्जेंटीना, दक्षिण कोरिया, कनाडा, माल्टा, सैन मैरिनो} आदि से विरोध का सामना करना पड़ रहा है।

(II) भारत द्वारा गुटनिरपेक्ष आंदोलन और जी-77 की उपेक्षा: गुटनिरपेक्ष आंदोलन और जी-77 पर भारत का ध्यान कुछ हद तक सीमित रहा है, जिसके परिणामस्वरूप ग्लोबल साउथ के देशों के बीच प्रभावी संचार के लिए चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं।

(III) चीन फैक्टर: चीन, अपनी अपार संपत्ति के साथ, ग्लोबल साउथ के देशों को आर्थिक और विकास सहायता प्रदान करता है। भारत को ग्लोबल साउथ में नेतृत्व की भूमिका के लिए चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है।

(IV) लगातार जुड़ाव की कमी: हालाँकि भारत ने अफ्रीका और इंडो-पैसिफिक क्षेत्रों के साथ शिखर सम्मेलन शुरू किए हैं, लेकिन यह उनके साथ लगातार जुड़ने में विफल रहा है। उदाहरण के लिए, 2015 से 2018 तक तीन शिखर सम्मेलनों के बाद से कोई भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन आयोजित नहीं किया गया है। भारत ने पापुआ न्यू गिनी में 2023 प्रशांत द्वीप शिखर सम्मेलन में भी भाग नहीं लिया।

(V) बिग ब्रदर एटीट्यूड: भारत पर ग्लोबल साउथ की घरेलू राजनीति में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया जाता है। इससे इन देशों में भारत के नेतृत्व के प्रति अविश्वास पैदा हुआ है। उदाहरण के लिए, मालदीव में "इंडिया आउट कैंपेन"।

(VI) परियोजना कार्यान्वयन में देरी: भारत का 'ग्लोबल साउथ की आवाज़' बनने का लक्ष्य भी निर्धारित समय सीमा के भीतर विकास परियोजनाओं को पूरा करने में असमर्थता के कारण चुनौतियों का सामना कर रहा है, उदाहरण के लिए कलादान परियोजना, एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर आदि में देरी।

(VII) आंतरिक विकास के मुद्दे: कुछ आलोचकों का सुझाव है कि भारत अन्य देशों को सहायता देने में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने से पहले अपनी घरेलू विकास चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करने पर विचार कर सकता है, जिसमें असमान धन वितरण, बेरोजगारी और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा जैसे मुद्दे शामिल हैं। भारत की पर्याप्त ग्रामीण आबादी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करती है, जो अन्य विकासशील देशों में इसी तरह के मुद्दों से निपटने की इसकी क्षमता पर विचार करने के लिए मजबूर करती है।

(VIII) विविध आवश्यकताएँ और प्राथमिकताएँ: वैश्विक दक्षिण के देश एक समरूप समूह नहीं हैं। विभिन्न देशों की अलग-अलग आवश्यकताएँ और प्राथमिकताएँ हैं। इन विभिन्न आवश्यकताओं को संतुलित करना मुश्किल हो सकता है। अफ्रीकी देश ऋण राहत को प्राथमिकता देने पर विचार कर सकते हैं, जबकि दक्षिण-पूर्व एशियाई देश प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर अधिक जोर दे सकते हैं।

(IX) वैश्विक साझेदारी को संतुलित करना: भारत के संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान जैसे विकसित देशों के साथ मजबूत आर्थिक संबंध हैं। यह वैश्विक दक्षिण की वकालत करने और

इन महत्वपूर्ण संबंधों को यथासंभव बनाए रखने के बीच संघर्ष पैदा कर सकता है। भारत को कड़े व्यापार नियमों की वकालत करने में सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि इससे विकसित देशों में उनके निर्यात पर नकारात्मक प्रभाव पैदा होने का अंदेशा हो सकता है।

(X) जलवायु परिवर्तन पर विश्वसनीयता: प्रति व्यक्ति कम CO2 उत्सर्जन के बावजूद, भारत दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा CO2 उत्सर्जक है। यह वैश्विक दक्षिण में मजबूत जलवायु कार्यवाही के आह्वान में इसकी स्थिति को और कमजोर करता है।

8.ग्लोबल साउथ का लीडर बनने में भारत के समक्ष उत्पन्न बाधाओं का संभावित समाधान:

(I) भारत का अपना विकास बैंक: भारत को दक्षिण के विकासशील देशों को विकास सहायता प्रदान करने और चीन के विकल्प के रूप में कार्य करने के लिए अपना स्वयं का विकास बैंक स्थापित करना चाहिए।

(II) गुटनिरपेक्ष आंदोलन को पुनर्जीवित करना: भारत को कोविड के बाद की दुनिया में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के मंच को पुनर्जीवित करने के लिए काम करना चाहिए। आज दुनिया में वैचारिक विभाजन और यूक्रेन-रूस युद्ध तथा इज़राइल-हमास युद्ध जैसे भू-राजनीतिक संघर्ष बढ़ रहे हैं।

(III) परियोजनाओं को पूरा करने की क्षमता में सुधार करना: भारत को परियोजनाओं की गुणवत्ता और समय पर पूरा करने में सुधार के लिए ऊर्जा और संसाधनों का निवेश करना चाहिए।

(IV) 'बिग ब्रदर' मानसिकता को त्यागना: भारत को 'बिग ब्रदर' मानसिकता को त्यागना चाहिए और आपसी विश्वास और सम्मान के आधार पर ग्लोबल साउथ के देशों के साथ संबंध बनाना चाहिए।

(V) निरंतर शिखर सम्मेलन: भारत को भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन को नियमित करके अफ्रीकी देशों और हिंद-प्रशांत देशों के साथ जुड़ना चाहिए।

9. निष्कर्ष:

भारत अपनी बढ़ती आर्थिक और भू-राजनीतिक ताकत के साथ वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में उभरा है। भारत खुद को ग्लोबल साउथ के एक प्रमुख अधिवक्ता के रूप में स्थापित कर रहा है और इस समूह के कई देश इस समय भारत पर अपना भरोसा जता रहे हैं। ग्लोबल साउथ में भारत की बढ़ती भागीदारी शांति, सुरक्षा, विकास और पर्यावरण संरक्षण जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए उसकी निरंतर प्रतिबद्धता और योगदान को दर्शाती है। इसके अलावा, देश ने 'वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ' शिखर सम्मेलन के दो सत्रों का सफलतापूर्वक आयोजन किया है। ग्लोबल साउथ में भारत की भागीदारी एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने का काम करती है। भारत की मजबूत आवाज चीन के लिए परेशानी का कारण बनती जा रही हैI दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप भारत वैश्विक दक्षिण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। औपनिवेशिक संघर्ष के समृद्ध इतिहास और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता के साथ, भारत के नेतृत्व को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर तेजी से मान्यता मिल रही है। विकासशील देशों की अनूठी चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारत के प्रयास जारी हैं। लोकतांत्रिक भारतीय शासन के प्रयास वैश्विक दक्षिण में इसकी प्रभावशाली स्थिति को रेखांकित करते हैं।

REFERENCES

1. लीस, निकोलस "चालीस साल बाद ब्रांट लाइन: उत्तर-दक्षिण संबंध जितने अधिक बदलते हैं, उतने ही वे समान रहते हैं?" अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन की समीक्षा 47 (1): 85–106. DOI : 10.1017/S026021052000039X (जनवरी 2021)।

2. ग्रे, केविन; गिल्स, बैरी के. "दक्षिण-दक्षिण सहयोग और वैश्विक दक्षिण का उदय". थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली .37(4): 557-574.DOI: 10.1080/01436597.2015.1128817. (2 अप्रैल 2016)।

3. एरिक्सन, थॉमस हाइलैंड "ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ में क्या गड़बड़ है?"। ग्लोबल साउथ स्टडीज सेंटर। (जनवरी 2015)।

4. पैगेल, हेइकी; रांके, करेन; हेम्पेल, फैबियन; कोहलर, जोनास "सामाजिक विज्ञान और मानविकी में 'ग्लोबल साउथ' अवधारणा का उपयोग"। बर्लिन का हम्बोल्ट विश्वविद्यालय (11 जुलाई 2014)।

5. मिटलिन, डायना; सैटरथवेट, डेविड "ग्लोबल साउथ में शहरी गरीबी: पैमाना और प्रकृति"। रूटलेज। पी. 13. आईएसबीएन 9780415624664- गूगल बुक्स के माध्यम से (2013)।

6. दादोस, नूर; कॉनेल, रेविन "द ग्लोबल साउथ"। संदर्भ . 11 (1): 12–13. DOI : 10.1177/1536504212436479 . JSTOR 41960738 . S2CID 60907088 (फरवरी 2012)।

7. रियूवेनी, राफेल एक्स.; थॉम्पसन, विलियम आर. "उत्तर-दक्षिण विभाजन और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन: एक संगोष्ठी"। अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन समीक्षा . 9 (4): 556–564. DOI : 10.1111/J.1468-2486.2007.00722.X . JSTOR 4621859. (2007).